१८. हमारा परिवार तथा घर

करके देखो

परिवार के लोगों की संख्या और माँ तथा पिता के व्यवसाय के आधार पर अपने परिवार के लोगों की जानकारी लिखो :

- **परिवार में माँ, पिता जी और बच्चों का समावेश होता है ।**
- **इसके अतिरिक्त कुछ परिवारों में दादा–दादी का भी समावेश होता है ।**
- **प्रत्येक परिवार के सदस्यों की संख्या अलग–अलग होती है ।**

हम अपने परिवार में जन्म लेते हैं और बड़े होते हैं । माता–पिता हमें छोटे से बड़ा करते हैं । वे हमारी देखभाल करते हैं । परिवार में हमें सभी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त होती है । परिवार में ही हमारे भोजन, वस्त्र तथा निवास की जरूरतें पूरी होती हैं । परिवार के अन्य व्यक्ति भी हमारी देखभाल करते हैं । परिवार के सदस्यों में परस्पर अपनापन होता है । प्यार और अपनेपन के कारण परिवार में रहना हमें अच्छा लगता है । किसी समस्या को हल करने में सब एक–दूसरे की सहायता करते हैं। कोई बीमार न पड़े, इसकी सावधानी रखते हैं । बीमार पड़ने पर हमारे माता–पिता हमारा उपचार और हमारी देखभाल करते हैं ।

छोटा परिवार और बड़ा परिवार

कुछ परिवारों में माँ, पिता जी और उनके एक या दो संतानें होती हैं । ऐसे परिवारों को हम छोटा परिवार कहते हैं । इसके विपरीत कुछ परिवारों में दादा–दादी, चाचा–चाची, सगे और चचेरे भाई तथा बहन आदि होते हैं । ऐसे परिवारों को बड़ा परिवार कहते हैं ।

विस्तारित परिवार

विस्तारित परिवार में हमारे परिवार के कई रिश्तेदारों का भी समावेश होता है । चाचा, चाची, मामा, मामी, बुआ, ममेरे भाई–बहन, मौसी इत्यादि हमारे रिश्तेदार होते हैं। इनके मेल से बनने वाले परिवार को हम विस्तारित परिवार कहते हैं । रिश्तेदारों के कारण हमारा परिवार अत्यंत विस्तार पा लेता है ।

विस्तारित परिवार

विस्तारित परिवार के सभी व्यक्ति प्राय: एक ही घर में नहीं रहते परंतु उनमें प्रेम तथा लगाव होता है । विभिन्न अवसरों पर वे एक-दूसरे से मिलते रहते हैं ।

- तुम्हारे विस्तारित परिवार में कौन-कौन हैं ?
- तुम्हारा उनके साथ क्या नाता-रिश्ता है ?
- तुम्हारे विस्तारित परिवार के लोग किन अवसरों पर तुमसे मिलते हैं ?

करके देखो

वंशावली या वंशवृक्ष : तीसरी कक्षा में पढ़ने वाली रेहाना अपने घर के सदस्यों के फोटो (छायाचित्र) का एक अलबम देख रही थी । जन्मदिवस तथा विवाह जैसे अवसरों के फोटो देखने पर उसे कुछ परिचित तथा कुछ अपरिचित चेहरे दिखाई दिए । कुछ चित्रों में समाविष्ट चेहरे उसे सबके साथ दीखे। रेहाना ने माँ से पूछा, ‘‘ये सब लोग कौन हैं ?’’ माँ ने कहा, ‘‘ये सब हमारे रिश्तेदार हैं । इस फोटो-अलबम में चाचा-चाची, मामा-मामी, दादा-दादी, नाना-नानी हैं ।’’ रेहाना ने माँ से कहा, ‘‘मुझे सब कुछ ठीक-से समझाकर बताइए ।’’ रेहाना को समझाने के लिए माँ ने एक चित्र बनाया ।

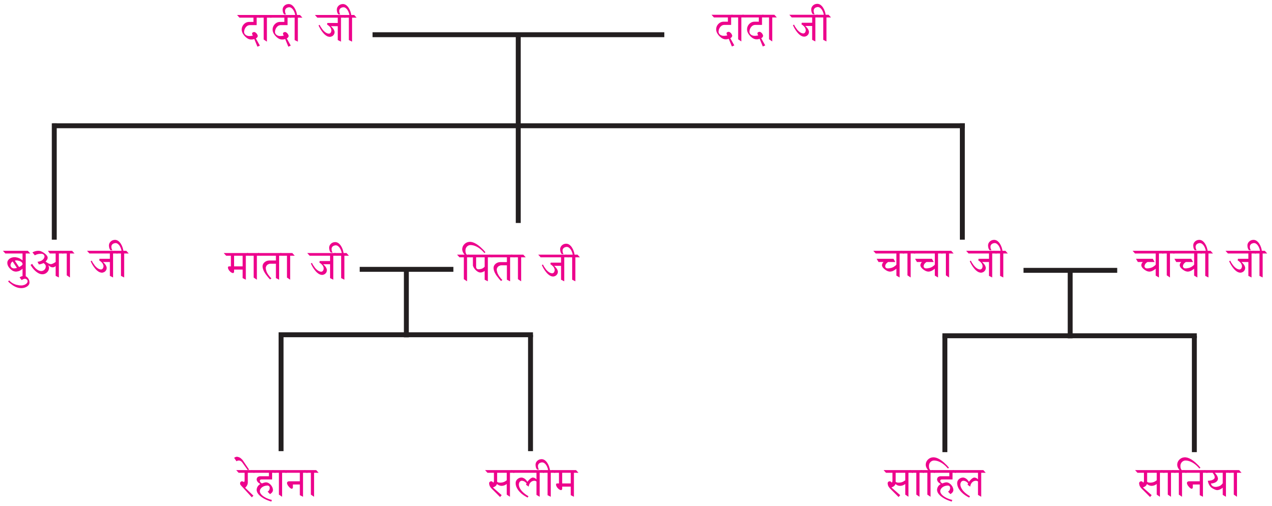

रेहाना की वंशावली / वंशवृक्ष

समय के व्यतीत होने पर परिवार की कई पीढ़ियाँ बनती जाती हैं । ऐसी पीढ़ियों से एक वंशावली तैयार होती है ।

- तुम माँ तथा पिता जी की सहायता से अपने परिवार की वंशावली तैयार करो ।

पारिवारिक संस्था में परिवर्तन

पारिवारिक संस्था में परिवर्तन होता जाता है । एक समय था; जब परिवार में दादा जी-दादी जी, माता जी-पिता जी, चाचा जी-चाची जी और अपने सगे, चचेरे भाई-बहन होते थे । उसे संयुक्त परिवार कहते थे । ये लोग एक-साथ रहते थे परंतु नौकरी, उद्योग, व्यवसाय आदि के कारण एक ही परिवार के सदस्य अलग-अलग स्थानों पर रहने लगे हैं । वहाँ उनका एक अलग परिवार बन जाता है । ऐसे परिवारों को एकल परिवार कहते हैं । इस प्रकार पारिवारिक संस्था में परिवर्तन आया है ।

परिवार संबंधी हमारे काम

एक ही व्यक्ति काम कर रहा है ।

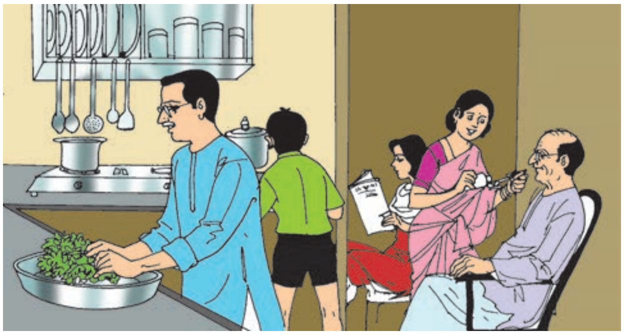

प्रत्येक व्यक्ति काम करता है ।

करके देखो

- अपने घर के कामों की एक सूची तैयार करो ।
- तुम्हारे घर में ये काम कौन करता है ?
- इनमें से कौन-से काम करना तुम्हें पसंद है ?
- क्या तुम अपने घर में एक-दूसरे के काम में सहायता करते हो ?

पानी का संचय, भोजन बनाना और स्वच्छता, ये परिवार में प्रतिदिन किए जाने वाले काम हैं । घरों में प्राय: तीज-त्योहार तथा समारोह भी मनाए जाते हैं । अतिथियों का आगमन होता है । उनका स्वागत-सत्कार करना पड़ता है । वृद्‍धों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ता है । घर में ऐसे बहुत-से काम होते हैं । सब लोगों को इन्हें बाँटकर करना चाहिए । परिवार का काम सब लोग बाँटकर करें तो किसी एक सदस्य पर अधिक बोझ नहीं पड़ता । घर के सभी छोटे-छोटे काम भी महत्त्वपूर्ण होते हैं । ये काम सभी लोग प्यार तथा अपनेपन से करते हैं । हमें इन सब बातों का भी भान होना चाहिए ।

घर की स्वच्छता तथा सजावट

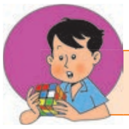

करके देखो

घर की स्वच्छता और उसमें सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए जो काम करने पड़ते हैं, उनकी एक सूची बनाओ ।

व्यवस्थित घर

अस्त-व्यस्त घर

- ऊपरवाले दोनों चित्रों में तुम्हें कौन-सा अंतर दिखाई देता है, उसे अपनी कॉपी में लिखो ।

यदि हमारा घर स्वच्छ तथा व्यवस्थित हो तो हमारा मन प्रसन्न रहता है । यदि घर की सभी चीजें यहाँ-वहाँ बिखरी पड़ी हों तो कोई वस्तु समय पर नहीं मिलती । घर को स्वच्छ रखना यह परिवार के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है । घर का कूड़ा-करकट इधर-उधर फेंकना नहीं चाहिए । उसे कूड़ेदान में ही डालना चाहिए । अपने घर के बाहर तो भूलकर भी नहीं फेंकना चाहिए । इससे पूरा परिसर स्वच्छ रखने में सहायता मिलती है ।

इसे सदैव ध्यान में रखो

- घर का गीला तथा सूखा कूड़ा अलग करो । उसे दो अलग-अलग टोकरियों में डालो । गीले कूड़े से खाद तैयार की जाती है । सूखे कूड़े में से कागज, काँच, टिन के टुकड़े अलग किए जा सकते हैं । उनका पुन: उपयोग किया जा सकता है ।

क्या तुम जानते हो

आज मोबाइल, सीडी, डीवीडी, पेनड्राइव और संगणक इत्यादि इलेक्ट्रानिक वस्तुओं का उपयोग प्रचंड रूप में बढ़ गया है । जब ये वस्तुएँ मरम्मत के योग्य नहीं रह जातीं तब ये अनुपयोगी हो जाती हैं । इन वस्तुओं के कूड़े का भी संचय होता है । जिसे 'ई-अपद्रव्य' कहते हैं । ई-अपद्रव्य से निस्तार पाना हमारे लिए एक विकट समस्या है ।

करके देखो

घर की सजावट करो

- सब लोग मिलकर तय करो कि घर की सजावट कैसे करनी है ।
- जो सजावट तुम स्वयं नहीं कर सकते, उसके लिए बड़ों की सहायता लो ।
- सजावट करने के लिए तुम किस सामग्री का उपयोग करोगे ?

नीचे दी गई सजावट की सामग्री में से जिस सामग्री का अधिक उपयोग नहीं करना चाहिए ; उसके नीचेवाली चौखट में x चिह्न बनाओ । बताओ कि इनका उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए ?

फूल	थर्मोकोल	प्लास्टिक	पताका	रंगोली	रासायनिक रंग
☐	☐	☐	☐	☐	☐

बताओ तो

त्योहार – उत्सव

- हम त्योहार-उत्सव क्यों मनाते हैं ?
- हमारे त्योहार-उत्सव किन बातों से संबंधित हैं ?

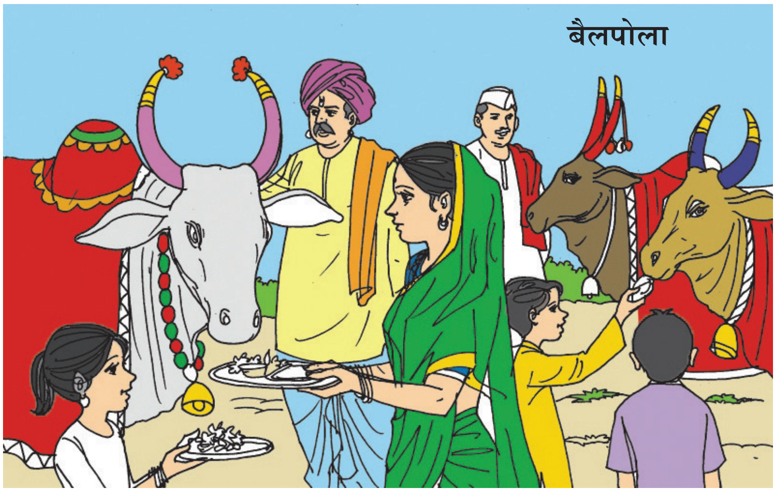

हम अपने परिवार में बहुत-से त्योहार तथा उत्सव मनाते हैं । परिवार

में ही नहीं; अपने देश के विभिन्न भागों में भी अलग-अलग उत्सव मनाए जाते हैं । अपने देश का मुख्य व्यवसाय खेती है । हमारे बहुत से उत्सव खेती तथा पर्यावरण से संबंधित होते हैं । होली वसंत ऋतु के स्वागत का उत्सव है । पंजाब में फसलों की कटाई के समय 'वैशाखी' (बैसाखी) नामक उत्सव मनाया जाता है । महाराष्ट्र में बुआई के बाद 'बैलपोला' उत्सव मनाया जाता है । तमिलनाडु और केरल में फसलों की कटाई के समय क्रमशः 'पोंगल' और 'ओणम' नामक उत्सव मनाए जाते हैं । दशहरा, दीपावली, गुढ़ी पाड़वा जैसे उत्सव फसलों के घर में आने के बाद मनाए जाते हैं ।

पर्यूषण पर्व, बुद्ध पूर्णिमा, रमजान ईद, बड़ा दिन, (क्रिसमस) पतेती भी महत्त्वपूर्ण त्योहार हैं । त्योहार तथा उत्सव चाहे कोई भी हो, सभी भारतीय उनमें खुशी से सहभागी होते हैं । एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं ।

'स्वतंत्रता दिवस' और 'गणतंत्र दिवस', हमारे राष्ट्रीय उत्सव हैं । ये उत्सव सभी देशवासी मनाते हैं । १५ अगस्त १९४७ के दिन हमारे देश को ब्रिटिश लोगों से स्वतंत्रता मिली । इसलिए इस दिवस को हम 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाते हैं । २६ जनवरी १९५० के दिन भारतीय संविधान लागू हुआ। इसलिए इस दिवस को 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया जाता है ।

उत्सव के कारण लोग इकट्ठे आते हैं । उनमें एकता की भावना बढ़ती है । उत्सव में प्रायः गीत, नृत्य, रंगोलियाँ, खेल, स्पर्धा, प्रतियोगिता इत्यादि की अधिकता होती है । इससे हमें आनंद मिलता है । त्योहार तथा उत्सव मनाते समय हमें इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि हमारे पर्यावरण को कोई क्षति न पहुँचे । यदि ऊँची आवाज में गीत सुने-सुनाए जाते हैं तो वृद्धों, परीक्षार्थियों और छोटे बच्चों को कष्ट होता है । ऊँची तथा कर्कश ध्वनि से ध्वनि प्रदूषण भी होता है ।

क्या तुम जानते हो

महाराष्ट्र में बहुत-सी आदिवासी जनजातियाँ रहती हैं । ठाणे जिले में 'वारली' नामक एक आदिवासी जनजाति पाई जाती है । ज्येष्ठ मास में बरसात के प्रारंभ में उनके यहाँ 'कोली भाजी' (नरम भाजी) नामक एक पारिवारिक त्योहार मनाया जाता है । कोली वास्तव में एक जंगली वनस्पति है, जिसका सब्जी (भाजी) के रूप में उपयोग होता है । बरसात का प्रारंभ होने पर यह वनस्पति उगती है । परिवार के सदस्य अपने आस-पास के परिसर में जाकर ताजा, नरम कोली एकत्र करके लाते हैं । सब्जी तैयार करके देवता को उसका नैवेद्य चढ़ाया जाता है । बाद में परिवार के सभी लोग एक साथ मिलकर भोजन ग्रहण करते हैं ।

क्या तुम जानते हो

शीतकाल में मकर संक्रांति नामक उत्सव मनाया जाता है । इस दिन मित्र-रिश्तेदार एक-दूसरे को तिल-गुड़ देते हैं । तिल इस समय पैदा होने वाली एक महत्त्वपूर्ण फसल है । ठंड के समय शरीर की ऊष्मा (गरमी) बनाए रखने के लिए तिल खाना उत्तम होता है ।

हमने क्या सीखा

* परिवार में हमें सभी प्रकार की सुरक्षा मिलती है ।
* छोटा परिवार, बड़ा परिवार और विस्तारित परिवार, ये परिवार के प्रकार हैं ।
* कई पीढ़ियों से एक वंशावली तैयार हो जाती है ।
* घर के प्रत्येक छोटे-बड़े काम महत्त्वपूर्ण होते हैं ।
* अपना घर तथा परिसर स्वच्छ रखना चाहिए ।
* हमारे कई उत्सव खेती और पर्यावरण से संबंधित हैं ।
* स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं ।
* पर्वों-उत्सवों द्‌वारा लोगों में एकता की भावना बढ़ती है । इस अवसर पर हम एक-दूसरे से मिलते हैं । परस्पर बातें करते हैं । हमें एक-दूसरे के लिए अपनापन का अनुभव होता है ।
* हम एक-दूसरे के सुख-दुख के सहभागी बनते हैं ।

स्वाध्याय

MR31BH

(अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) परिवार में कौन-सी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं ?
(२) बीमार होने पर हमारी देख-भाल कौन करता है ?
(३) विस्तारित परिवारों के सदस्य कब एकत्रित होते हैं ?
(४) उत्सव में किन बातों की अधिकता होती है ?

(आ) सही अथवा गलत, लिखो :

(१) दुख-कष्ट के समय सभी को एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए । ☐
(२) घर के सभी काम सब लोगों को बाँटकर करने चाहिए । ☐
(३) कूड़े को कूड़ेदान में नहीं डालना चाहिए । ☐
(४) इतनी ऊँची आवाज में गाने नहीं सुनने चाहिए, जिससे ध्वनि प्रदूषण हो । ☐

उपक्रम

(१) दादी जी और दादा जी के समय के आभूषणों, बरतनों की सूची बनाओ । उनके चित्र भी बनाओ ।
(२) अपने अभिभावक अथवा शिक्षक की सहायता से विभिन्न पर्वों तथा उत्सवों से संबंधित अंतर्कथाएँ सुनो, समझो और उनसे संबंधित जानकारी प्राप्त करो ।

* * *